श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः

अनंत लब्धिनिधान गुरुश्री गौतम स्वामीने नमः

## युग प्रधान आचार्यसम पंन्यास प्रवर

# श्री चन्द्रशेखर विजयजी महाराज

## का जीवन चरित्र

# इन्द्रवदन से युग-प्रधान

संपादक

**स्पर्धा सम्राट प्रियेश शाह**

-: प्रकाशक :-

**लब्धि निधान ग्रुप**

वी/१४/३०२, विनयनगर,

मीरा भायंदर रोड, प्लेझन्ट पार्क के सामने

मीरा रोड (ईस्ट),मुंबई - ४००११०७

Mob.: 9321646422 / 9327333483

E-mail : gautamswami01@gmail.com

२५ प्रकाशन

| | | |
|---|---|---|
| **नाम** | :- | परम पूज्य पंन्यासप्रवर श्री चन्द्रशेखर विजयजी महाराजा |
| **जन्मदिवस** | :- | सं. १९९०, फागण सुद पांचम, ता. १८-२-१९३४ |
| **जन्म स्थल** | :- | इर्ला, मुंबई |
| **मूल वतन** | :- | राधनपुर |
| **माताश्री** | :- | सुभद्राबेन |
| **पिताश्री** | :- | कांतिभाई |
| **संसारी नाम** | :- | इन्द्रवदन |
| **भाई** | :- | प्रफुल्लभाई |
| **बहेन** | :- | निरुबेन, मंजुलाबेन (सा. श्री. महानंदाश्रीजी म.सा.) |
| **व्यवहारिक अभ्यास** | :- | कक्षा – १० (s.s.c) |
| **दीक्षा दिन** | :- | सं. २००८. वैशाख वद – ६, ता. १५-५-१९५२ |
| **दीक्षा स्थल** | :- | मोतीशा जैन देरासर रंगमंडप, भायखला, मुंबई |
| **बडी दीक्षा** | :- | सं. २००८, अषाढ़ सुद – ४ |
| **गुरुदेव** | :- | सिद्धांत महोदधि पूज्य आचार्य भगवंत<br>श्री विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. |
| **शिक्षादाता** | :- | वर्धमानतपोनिधि पूज्य आचार्य श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा. |
| **विद्यादाता** | :- | पूज्य आचार्य श्री गुणानंदसूरीजी म.सा.<br>पं. श्री इश्वरचंद्रजी<br>पं. श्री दुर्गानाथजी झा<br>पं. श्री प्रभुदासभाई पारेख |
| **गणि – पंन्यास पद** | :- | सं. २०४१, मागसर सुद-१० |
| **प्रथम शिष्य** | :- | मुनि चन्द्रसेन विजयजी म.सा. |
| **अंतिम शिष्य** | :- | मुनि ज्ञानहंसविजयजी म.सा. |
| **कुल शिष्य-प्रशिष्य परिवार** | :- | १२७ |
| **गृहस्थ पर्याय** | :- | १८। वर्ष |
| **संयम पर्याय** | :- | ६०। वर्ष |
| **आयुष्य** | :- | ७८।। वर्ष |

**प्रथम चातुर्मास** :- भायखला, मुंबई

**अंतिम चातुर्मास** :- आंबावाडी, अहमदाबाद

**कुल चातुर्मास** :- ६०

**आचार्यपदारुढ शिष्य** :- ८

**पंन्यासपदारुढ शिष्य** :- ११

**प्रथम पुस्तक** :- साधनानी पगदंडीए

**अंतिम पुस्तक** :- तो भारतनो उदय चपटीमां

**कुल पुस्तक लेखन** :- ३००

**विशिष्ट गुण** :- गुरुपारतंत्र्य, सरलता, पापभीरुता, सुविशुद्ध ब्रह्मचर्य. शास्त्र निष्ठा, श्रमण घडतर, शुद्ध प्रायश्चित, शासन प्रभावकता, वैराग्य, शासन राग, नीडरता, इत्यादि....

**शासनप्रभावकता** :- व्याखयानो, शिबिरो द्वारा अनेक लोगो के हदय में जिनशासन की स्थापना की.

**तीर्थरक्षा** :- अंतरीक्षजी तीर्थ की रक्षा के लिए ३ चातुर्मास किये। सम्मेतशिखरजी, गिरनारजी, मक्षीजी तीर्थ की रक्षा के लिए बहुत प्रयत्न किये।

**जीवरक्षा** :- दुष्काल के समय करोडो का फंड कराके अबोल जीवो को अभयदान ; नूतन (नए) ५६००० कतलखाने बनते रुक्काए, देवनार कतलखाने का आधुनिकरण करने से रुकवाया, बुंदेलखंड-दुष्काल, पूर, सुनामी, भूकंप, आदि के समय दानवीरो को दान के लिए युवानो को अपनी युवाशक्ति से तीर्थरक्षा के लिए प्रेरित किया।

**कालधर्म दिवस** :- सं.२०६७, श्रावण सुद – १०, ता.८-८-२०११

**कालधर्म समय** :- दोपहर – १२.४०

**कालधर्म स्थल** :- आंबावाडी, अहमदाबाद

**समाधि स्थल** :- तपोवन संस्कारपीठ, अमियापुर (समाधि तीर्थ)

**युगप्रधान आचार्यसम पद प्रदान** :- सं. २०६९, कारतक वद १४, सुरत (गोपीपुरा)

- इन्द्रवदन का जन्म होते ही माता ने सबसे पहले कान में नवकार मंत्र सुनाया और बोला : "बेटा ! शासन दीपक बनजे।"
- जन्म के ४१ वें दीन में पूज्यपाद आचार्य देवश्री प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा के पास वासक्षेप करवाया।
- इन्द्रवदन एवं अन्य भाई-बहनो को संस्कार देने में भुआ समुबहन का महत्व का हिस्सा था।
- इन्द्रवदन तीन साल की उम्र के थे तब श्री प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा ने उनके पिता को कहा था कि, "कान्ति! तेरे ये दोनो बच्चो को में उठा के ले जाउंगा।"
- बाल्य अवस्था से ही इन्द्रवदन में सुपात्रदान, जीवदया, अनुकंपा, पापभीरुता, रात्रिभोजन त्याग के गुण थे।
- अपने कपाल के उपर बडा तिलक, हाथ में पानी का मटका, बिना चप्पल स्कुल जाना यह नियम इन्द्रवदन ने बना दीया था! और कहते थे : "जो मैं भगत हुं ऐसा स्कुल में प्रसिद्ध हो जाउ तो कोई खराब मित्र मेरे पास आयेंगे ही नहीं और लडकीयाँ तो मुझ से दूर ही भागेगी. बस ! फिर शांति।"
- परमात्मा की पूजा किये बिना नवकारशी का पच्चक्खाण नहीं पारते थे।
- इन्द्रवदन को बाल्य अवस्था में धार्मिकज्ञान एवं वैराग्य घडतर पंडितश्री गोरधनदास ने किया था।
- इन्द्रवदन पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी म.सा. को कहते थे कि, "गुरुदेव ! मुझे दिन में एक गाथा भी याद रहती नहीं है। में आपकी तरह पढ नहीं पाउँगा। में दीक्षा लेने के बाद आपके पुस्तक सेट कर दुँगा, आपको ठंडा पानी पीलाउंगा मुझे और कुछ नहीं आता है।"
- तब पूज्य श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी महाराजा कहते थे कि, "इन्द्रवदन ! चिंता न कर, तुं माराथी सवायो थईश।"

  उस समय पूज्यश्री ने इन्द्रवदन को मंदिरान्त प्रवेशीका (संस्कृत व्याकरण पुस्तक) का प्रथम पाठ का प्रारंभ करवाया था।
- इन्द्रवदन ने अठराह साल की उम्र में संसार का त्याग करके दीक्षा ग्रहण की थी।

- दीक्षा के अगले दिन वरसीदान का वरघोडा पूर्ण करके अपने गुरुदेव के पास जीवनभर १०० नियम ग्रहण करने के लिए गये थे।
- संवत. २००८ के वैशाख वद – ६ के दिन जब इन्द्रवदन की दीक्षा हुई तब सब लोग बोल रहे थे कि वर्तमान के शालिभद्र की दीक्षा हुई।"
- पूज्यपाद दादा गुरुदेव श्री प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा को गुरु नहीं परंतु साक्षात भगवान मानकर उनकी सेवा एवं वैयावच्च करते थे।
- दीक्षा के १६ साल तक सभी मिठाइ, तला हुआ फरसाण एवं फ्रुट का त्याग था।
- वि.सं. २००९, मागसर वद – ६ पूज्यपाद गुरुदेवश्री को दीक्षा के सात महीने पूर्ण होने पर उस दिन गुरुदेव ने २१० गाथा की थी। (दीक्षा के २१० दिन पूर्ण होने पर)
- चातुर्मास के दरम्यान सिर्फ १२० दिनो में एक लाख श्लोक प्रमाण साहित्य का वांचन कीया था।
- जीवसमास नाम के ग्रंथ के शुरुआत के ८२ श्लोक पर फुलस्केप बुक के एक हजार पेज भर कर संस्कृत में नूतन सर्जन किया है।
- अपने जीवन में २० हजार श्लोक कंठस्थ किये थे। और हर रोज ४ हजार श्लोक का पुनरावर्तन करते थे।
- श्री प्रभुदास बेचरदास पारेख के पास से पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने भारतीय संस्कृति की महानता, पश्चिमी संस्कृति का आया हुआ भयंकर तूफान, राष्ट्र की वर्तमान विषम परिस्थिती, अंग्रेजो की बदचाल विषयो का ज्ञान प्राप्त किया।
- पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने श्री प्रभुदास भाई को धर्मपिता के नाम से जाहिर किया।
- दीक्षा जीवन के छट्ठे साल में वि.सं. २०१४ में प्रथम पुस्तक साधनानी पगदंडी का लेखन किया।
- पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने न्याय का अभ्यास करते करते १० हजार पेज का लेखन कार्य भी किया था।
- न्याय कुसुमांजली जैसा कठिन ग्रंथ पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने ६७ दिन में २७६२ पेज का लेखन करके पूरा किया।
- पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने न्याय कुसुमांजली ग्रंथ का १० नोटबुक भर के लेखन किया है।

- वि.सं. २०२३ में अहमदाबाद-ज्ञान मंदिर में चातुर्मास में तत्वज्ञान की वाचना से तैयार हुअे युवानो के लिए श्रमणोपासक विद्यार्थी संघ की स्थापना हुई। उसी समय मुक्ति पंथ दानपेटी योजना का प्रारंभ हुआ।
- वि.सं.२०२४ में पूज्यपाद श्री प्रेम सूरीश्वरजी महाराजा ने अपना अंतिम समय जानकर पूज्यपाद गुरुदेवश्री को आयुर्वेद दवाई के लिए खंभात से लिंबडी भेजा, जबकी बोटाद में पता चला की श्री प्रेम सूरीश्वरजी महाराजा ने दुनिया से बिदाई ली।
- वि.सं. २०४४ के श्रमण संमेलन में संघ एकता, साधु समुदाय एकता, महत्व के निर्णय में पूज्यपाद गुरुदेवश्री का महत्व का योगदान था।
- वि.सं.२०६३ में ८ दिन की कन्या शिबिर में विरति वृंद की स्थापना हुई।
- पूज्यपाद दादा गुरुदेवश्री प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा ने पूज्यपाद गुरुदेवश्री को आर्शीवचन दिये थे कि "तुं ज्या जाय त्यां एकता करावजे, संघर्षो मिटावजे।"
- जून-१९६९ से ८ पेज की ३ हजार कोपी से पूज्यपाद गुरुदेवश्री के चिंतनो से भरा हुआ मुक्तिदुत नाम का मासिक का प्रारंभ हुआ। जो आज २० पेज और १५ हजार नकल पे पहुंचा है।
- वि.सं.२०२८, कारतक सुद-१ के दिन, जामनगर में पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने वीर सैनिक दल की स्थापना की।
- वि.सं.२०२८ के भूज चातुर्मास में रविवार के रामायण के प्रवचन में जैन अजैन १० हजार श्रोताओ सूनने आते थे।
- वि.सं. २०२९ श्रावण वद-८ के दिन अहमदाबाद मे युवा प्रवचन में पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने २५०० युवानो को वीर सैनिक बनाया।
- सभी वीर सैनिक को पांच प्रतिज्ञा दी।

  १) कम से कम नवकारशी का पच्चक्खाण

  २) रात्रि भोजन त्याग

  ३) कंदमूल त्याग

  ४) सिनेमा त्याग

  ५) स्वद्रव्य से जिनपूजा

- पानसर तिर्थ में पूज्यपाद गुरुदेव को अति प्रिय एसे प्रभु वीर के सानिध्य में वि.सं. २०३० वैशाख सुद-१० के दिन अखिल भारतीय सांस्कृतिक रक्षक दल की स्थापना की।
- प्रभुवीर की २५०० वी निर्वाण कल्याणक की राष्ट्रीय स्तर की उजवणी का पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने विरोध किया। डोक्युमेन्टरी फील्म एवं कुंडलपुर का राजकुमार फील्म का पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने सखत विरोध किया। पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने उपवास से आंदोलन का प्रारंभ किया। सखत परिश्रम के बाद चार उपवास करके यह विरोध यात्रा का विजय हुआ।
- वि.सं. २०३२ पोष सुद-७ से अहमदाबाद विद्याशाला में १०५ युवानो को पयुर्षण पर्व आराधना करवाने की तालिम वर्ग शुरु किया। जो १८ संघो में आराधना कराने गये थे।
- शुद्धि सम्राट पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने १७००० लोग को भवआलोचना देकर शुद्धि का प्रदान किया है।
- अंतरीक्षजी तीर्थ रक्षा के लिए पूरे भारत का श्वेतांबर जैनो का नासीक में मिलन करके अखिल महाराष्ट्र जैन शासन रक्षा समिति की स्थापना वि.सं. २०३६ में की।
- वि.सं. २०३७ फागण वद २ के दिन पूज्यपाद गुरुदेव ने विराट जनमेदनी के साथ मुंबई में महाराष्ट्र के मुखप्रधान अंतुले के निवासस्थान जाकर तीर्थ रक्षा की बाते की। फिर वहां से विहार करके पूज्यपाद गुरुदेवश्री १४/६/१९८१ के दिन अंतरीक्षजी तीर्थ पहोंचे।
- वि.सं. २०३७ के चातुर्मास में पूज्यपाद गुरुदेवश्री की निश्रा में अंतरीक्षजी तीर्थ में आसो सुद १०,११,१२,१३ चार दिन का १२०० युवानो का संम्मेलन हुआ।तीन चातुर्मास पूज्यपाद गुरुदेवश्रीने अंतरीक्ष तीर्थ में किये। जिसमें दोपहर के समय पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतो के लिए श्री संवेगरंगशाळा ग्रंथ पर वाचना हुई।
- तीर्थ रक्षा का शासन प्रभावक कार्य पूर्ण करके पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने अंतरीक्षजी तीर्थ से २२/१२/१९८४ को विहार प्रारंभ किया।
- अंतरीक्षजी से विहार करके महा सुद-१३, २०४० के दिन संगमनेर में पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने पांच मुमुक्षुओ को सामुहिक दीक्षा प्रदान की।
- वि.सं.२०४१ का पूज्यपाद गुरुदेव श्री का चातुर्मास नानपुरा – सुरत में था, वहां १००० भक्तो ने भव आलोचना द्वारा अपने जीवन की शुद्धि की।
- तपोवन संस्कार धाम – नवसारी में मागसर सुद १०, २०४१ के दिन तीन शिष्यो की दीक्षा के साथ पूज्यपाद गुरुदेव श्री को गणि एवं पंन्यास पद अर्पण हुआ।

- वि.सं.२०४२ में गुजरात के दुष्काल के समय पांजरापोल के पशुओ को बचाने के लिये २.५ करोड के फंड का संकल्प किया पर ३.५ करोड का फंड हुआ।
- वि.सं. २०४४ के पंकज सोसायटी अहमदाबाद के चातुर्मास में पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने ५० साधु-साध्वीजी भगवंतो को मुक्तावली का अभ्यास करवाया।
- ४/४/१९९३ के दिन पूज्यपाद गुरुदेवश्री के अथाग प्रयत्न से गुजरात के मुख्यमंत्री द्वारा गौ वंश हत्या प्रतिबंध वटहुकम जाहिर हुआ।
- आचार चुस्त पंडितो को तैयार करने के लिये १/१२/१९९३ के दिन तपोवन संस्कृत पाठशाला का प्रारंभ हुआ।
- सम्मेत शिखरजी तीर्थ रक्षा के लिये पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने पंकज सोसायटी- अहमदाबाद में १०/४/१९९४ को विराट सभा का आयोजन किया था। २० हजार जैनो की विशाल रेली कलेक्टर की ओफीस लेकर गये थे। चैत्र सुद-८ के दिन पूरे गुजरात के संघो में ८ लाख आयंबिल हुअे थे।
- गिरनारजी तीर्थ पर रोप वे का प्रोजेक्ट पूज्यपाद गुरुदेव के अथाग प्रयत्न से केन्सल हुआ। यह आंदोलन की सफलता के अंत में २६/५/१९९९ को पूज्यपाद गुरुदेव श्री को लेखित में पत्र भी आ गया था।
- सुरत में प्लेग हो या पूर हो, कच्छ में भूकंप हो ,या गुजरात में दुष्काल हो हर समय पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने अपने प्रवचनो द्वारा फंड करवा के राहत के कार्य करवाये है।
- भारत सरकार का १८०४ करोड के खर्चे से बनने वाले ५६ हजार कतलखाने का विरोध करके जबरदस्त आंदोलन किया।
- वि.सं.२०५८ में पांजरापोल को प्राणवंत बनाने के लिए समस्त महाजन नाम की संस्था का प्रारंभ हुआ।
- वि.सं.२०६० तपोवन-नवसारी के चातुर्मास में अपने शिष्यो को तीन नियम दिये।

  १) ट्रस्ट बनाना नहीं ।

  २) संस्था स्थापना नहीं ।

  ३) हाईवे पे तीर्थ बनाना नहीं ।
- पर्युषण पर्व के समय में ९ दिन कतलखाना बंध रखना यह कार्य में पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने बडी जहमत उठाई थी तब सफलता मिली थी।

- देवनार कतलखाना के आधुनिकरण के विरोध में पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने २/८/२००८ से आंदोलन प्रारंभ करके जबरदस्त सफलता प्राप्त की ।
- वि.सं.२०३९ अषाढ सुद-१ से नवसारी के पास बाल संस्करण के लीये **'तपोवन संस्कार धाम'** का १५० विद्यार्थी से प्रारंभ हुआ।
- साबरमती के पास दुसरा तपोवन संस्कार पीठ का शिलान्यास २३/९/१९९३, भादरवा सुद-८,२०४९ को हुआ और १६५ विद्यार्थी के साथ २७/६/१९९४ से संस्करण यज्ञ का प्रारंभ हुआ।
- कई जगह पर महावीर खिचडी घर, छास केन्द्र, ठंडी में ब्लेंकेट वितरण द्वारा अनुकंपा के कार्य पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने करवाये थे।
- पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतो के संयम को लक्ष में रखकर विरतिदूत मासीक का प्रारंभ किया।
- श्रावण सुद-१०,२०६७ दोपहर १२.४० बजे पूज्यपाद गुरुदेवश्री का कालधर्म हुआ। श्रावण सुद-११ के दिन सुबह ९ बजे पूज्यपाद गुरुदेवश्री के पार्थिव देह को ९ शिखरीय पालखी में बिराजमान करके आंबावाडी उपाश्रय से पालखी यात्रा का प्रारंभ हुआ।
- २५ कि.मी. पालखीयात्रा चलकर तपोवन संस्कारपीठ में आकर शाम को छह बजे पूज्यपाद गुरुदेव श्री के परमपुनित देह को अंतिम क्रिया करवाई।
- वि.सं. २०६९, कारतक वद चौदस के दिन पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री जयधोष सूरीश्वरजी महाराजा ने सुरत में गृह चैत्य मे पूज्यपाद गुरुदेवश्री के चरण पादुका की प्रतिष्ठा के समय पूज्यपाद गुरुदेवश्री को 'युगप्रधान आचार्यसम' पद अर्पण किया।
- पूज्यपाद गुरुदेव श्री के ३४ शिष्य, ५४ प्रशिष्य एवं ३९ प्रप्रशिष्य कुल १२७ का परिवार है। जिस मे से ८ शिष्यो का कालधर्म हुआ है। और ११९ शिष्य विद्यमान है।